परमात्मा की दयालुता

ईश्वर की कृपा तथा अपने सँस्कार वश ही मनुष्य सत्संग में प्रवेश करता है . सत्संग में आकर बहुत से भाई यह चाहते हैं कि परमात्मा (श्री गुरुदेव) क्यों नहीँ अपनी कृपा शक्ति द्वारा हम लोगों का शीघ्र उद्धार कर देते ? मन और माया के बन्धन से आत्मा को शीघ्र क्यों नहीं निकाल देते ? यह एक समान्य प्रश्न है जो अक्सर सत्संगी भाईयों के हृदय में उठा करता है . सत्संग में प्रवेश करने पर जीव के हृदय में जगत और परमात्मा के बीच अन्तर्द्वन्द होने लगता है . जन्मोजन्म से वह जगत के बन्धनों , माया - मोह के जालों में फँसा है . सत्संग में आने के बाद प्रभु - प्रेम का आस्वादन उसे अच्छा लगने लगता है , किन्तु जगत के आकर्षण शीघ्र अपना प्रभाव नहीं छोड़ते . इस बीच की स्थिति में उसका हृदय मंथन करता रहता है . धर्म और अधर्म , प्रेम और मोह , सत और असत का राम - रावण युद्ध निरन्तर चलता रहता है . सत्संगी अपने व्यवहार के प्रति जागरूक रहता है , किन्तु पुराने संस्कार एवं माया - मोह के आकर्षण उसे अपनी ओर भरपूर खींचते रहते हैं . उसे मालूम होता है कि अमुक जगह वह अधर्म और असत व्यवहार में फँस गया है . ऐसी दशा में वह चाहता है कि क्यों नहीं परमात्मा रूप श्री गुरुदेव हमारी सम्भाल कर लेते हैं और हमेशा - हमेशा के लिए हमें इस भव - बंधन तथा माया मोह से मुक्त कर देते ?

बहुत से लोग जो सत्संगी नहीं हैं , दुनियादार हैं , वे भी ऐसी ही बातें करते हैं कि जब परमात्मा चाहेगा हमसे दुनियाँ छुड़ा देगा . मुझे अपनी ओर से इसकी कुछ चिन्ता नहीं करनी चाहिये . ऐसे लोगों का अहं बहुत ही पुष्ट होता है . माया - मोह का आकर्षण इन्हें कसकर घेरे रहता है . संतों की बातें उनके लिए बंजर भूमि में बीज डालने के समान है . फिर भी ईश्वर कृपा से उनके भी कभी न कभी शुभ संस्कार उत्पन्न होंगें . ऐसे सज्जनों और सतसंगी भाइयों के लिए यह बता देना आवश्यक है कि परमात्मा परम दयालु है . दयालुता का अर्थ है कि जिससे जीव का सबसे उत्तम लाभ हो , सबसे अधिक कल्याण हो , वही परमात्मा दया वश उसके लिये करते हैं . वैसे परमात्मा तो सर्वशक्तिमान हैं ही और वह जब चाहें आत्मा को क्षण भर में मन और माया के जाल से मुक्त करा सकते हैं . लेकिन जीव इसे बर्दाश्त नहीं कर सकेगा . जब तक मन सतदेश का वासी नहीं होगा अर्थात सतोगुणी नहीं होगा , तब तक आत्मा को उससे ज़बरदस्ती हटाने में तन और मन व्याकुल हो उठेंगें और उस पीड़ा को जीव कभी भी बर्दाश्त नहीं कर सकेगा . इसलिए परमात्मा की यह असीम दयालुता है की वह किसी के साथ ज़ोर ज़ुल्म नहीं करता . अपनी शक्ति का प्रदर्शन नहीं करता . आत्मा को ज़बरदस्ती ऊपर खींचने में जीव बेहोश हो जायेगा या उसे भारी बीमारी लग जायेगी . ऊँचे घाट का हल्का सा रस पाकर मन उसी में मस्त हो जावेगा और उसी मस्ती में पड़ा रहेगा . ऊपर का कार्य परमात्मा रूप है . इस स्थिति में मन पूर्णतः शाँत होकर आत्मा के आधीन हो जाता है . मन की यह दशा आत्मा को ज़बरदस्ती ऊपर खींचने से कदापि नहीं हो सकती . इसके अलावा परमात्मा का यह अटल नियम है कि जीव को अपने कर्मों का फल भोगना ही पड़ेगा . यदि ऐसा विधान नहीं होता तो पाप - पुण्य की परख ही नहीं रह जाती . जीव को बुरे कर्मों से रोकने का कोई

साधन ही नहीरह जाता . बुरे कर्मों द्वारा जीव का स्वप्न में भी उद्धार नहीं हो सकता था . वह और नीचे ही गिरता जाता है इसलिए ईश्वर - कृपा से यदि कोई सत्संग में प्रवेश करता है तो उसके पिछले बुरे संस्कार भी साथ रहते हैं . इसी कारण वह जाने - अनजाने नीचे की ओर गिरता रहता है . संत सतगुरु की शरण पकड़ने पर उसके पिछले संस्कारों के वेग में कमी आजाती है तथा उन्हीं की दया से उन संस्कारों के भोगने में उसे आसानी हो जाती है . अतः सच्चे भाव से संत -सदगुरु की शरण लेनी चाहिये . उन्हीं की कृपा से बुरे संस्कारों के फल आसानी से भोगे जा सकते हैं . और भविष्य में चढ़ना साधकों के लिए स्वाभाविक है . इससे उन्हें घबराना नहीं चाहिये . जो गिरता नहीं है वह ऊपर चढ़ने की सोचता कहाँ है ? लेकिन हर हालत में उसे श्री गुरुदेव में अपनी श्रद्धा अधिक मज़बूत करते जाना चाहिये और भविष्य के लिए बुरे कर्मों पर सच्चे दिल से पश्चात्ताप करना चाहिये तथा मन ही मन उन दुर्बलताओं पर विजय प्राप्त करने के लिए अपने श्री गुरुदेव से प्रार्थना करते रहना चाहिये . संत सदगुरु परमात्मा रूप होते हैं . वे जीव के अधिकार के अनुसार उसकी आत्मा को विषयों से खींचते हैं . सुरत के साथ यदि मन को भी नहीं खींचा गया या उसे जगत के विषयों से उपराम नहीं कर लिया गया तो केवल आत्मा के खिंचने से वह पुनः शीघ्र ही नीचे गिर जायेगी . इसलिए परमात्मा या सतगुरु शीघ्रता नहीं करते हैं .

परमात्मा का काम मारना नहीं , जिलाना है . काल मारता है , परमात्मा जिलाते हैं . शरीर के नाश होने पर आत्मा के साथ मन मिला रहता है . मन जब तक अपनी इच्छाओं को नहीं भोग लेता तब तक वह आत्मा को नहीं छोड़ता . इच्छाओं को भोगने के लिए मनुष्य जीवन ही एकमात्र साधन है जिसे परमात्मा कृपा करके हमें प्रदान करते हैं . काल इसे पसन्द नहीं करता . इसलिए वह मृत्यु के द्वारा जीव को मारता रहता है जिससे जीव अपनी समस्त इच्छाओं को भोग कर काल के चंगुल से हमेशा - हमेशा के लिये निकल जावे .अतः जीव का यह धर्म है कि वह सत्संग में आकर इच्छाओं से उपराम हो जाये .

संत भी मन को मारने की बात बतलाते हैं , किन्तु उनका मारना काल की मौत से भिन्न है . संतो के मारने का मतलब यह है कि तन और मन से आसक्ति समाप्त हो जाये जिससे आत्मा स्वतः असली रूप का परिचय प्राप्त कर ले . इस प्रकार की शिक्षा दी जाती है कि वह इस शरीर में रहते हुए इससे अलग हो जाये . इसके अलावा मन जिन - जिन वासनाओं में लिप्त है उनकी असारता का अनुभव कर ले और उनसे उपराम हो जाये . जगत तथा जगत की वस्तुओं की असारता के स्वयँ अनुभव कर लेने पर वह पुनः उनमें न फंसेगा तथा उनसे उपरति ग्रहण कर लेगा . इस प्रकार वह अपने कर्मों के फल से वंचित हो जायेगा . जब उसकी यह दशा हो जायेगी तब वह आत्मा को जगत के भोग के लिए नहीं खींचेगा. इसके विपरीत वह शाँत हो जायेगा और ऊपर के अभ्यास में जहाँ तक उसकी पहुँच है उस सीमा तक आत्मा का साथ देगा . यही परमात्मा द्वारा तन और मन का मारना है . फिर आत्मा स्वतः अपने आनंद का अनुभव करने लगेगी और उसे प्रभु -प्रेम का पान कराते रहते हैं . इसलिए परमार्थ शीघ्रता का कार्य नहीं है . इसमें जल्दबाजी नहीं की जा सकती . परमात्मा का यहीं वरदान है

कि वह जीव को अधिकार भेद एवं संस्कार अनुसार परमात्मा प्राप्ति का अवसर देते हैं . इसी में जीव का सच्चा उद्धार है . यही परमात्मा की दयालुता है .

अमृत वेला

प्रभात के समय जब एक प्रहर रात्रि होती है, उस शुभ अवसर को ब्रह्ममहूर्त कहते हैं. संतों ने इसको 'अमृत वेला ' कहा है. इसी समय को प्राचीन काल से ऋषिओं तथा महापुरुषों ने ईश्वर भजन के लिए निर्धारित किया हैं.

भक्ति के लिए सब समय ठीक हैं, परन्तु प्रातःकाल का समय ईश्वर भक्ति में विशेष सहयोग देता है. इस समय ईश्वर की दया का प्रभाव अधिक पड़ता है. मनुष्य दिन में परिश्रम करता है. उसका शरीर थक जाता है, इसलिए पहली निद्रा में वह सो जाता है. जब वह जागता है तो उस समय प्रातः के तीन - चार बजे का समय होता है. तब वह अपने को स्वस्थ तथा उत्साहपूर्ण अनुभव करता है. रात्रि को नींद में आत्मा मस्तिष्क से उतर कर कण्ठ या नाभि में स्थित हो जाती है. जब मनुष्य जागता है तब वह पुनः अपने स्थान पर आ जाती है. प्रातःकाल करोबार और व्यवहार की कोई चिन्ता नहीं होती. यह मन को एकाग्र करने का उचित समय है. इस समय मन स्वच्छ होता है और वृत्तियाँ इधर-उधर नहीं भागती. इस ब्रह्म महूर्त के समय जीव ईश्वर के अधिक निकट होता है. इस समय की भक्ति तथा मन की एकाग्रता का प्रभाव दैनिक व्यवहार पर भी पड़ता है. मनुष्य एकाग्रचित्त होकर अपना कार्य करता है. सूर्य के उदय होने के पश्चात वृत्तियाँ बिखर जाती हैं तथा एकाग्रता भंग हो जाती है.

अभ्यास भोजन के तुरन्त बाद नहीं करना चाहिये. अभ्यास के लिए पेट जितना ख़ाली हो उतना ही लाभदायक है. ब्रह्म महूर्त के समय भोजन हज़म होकर पेट ख़ाली रहता है. ब्रह्म महूर्त को साधारण मनुष्य रात्रि जानकर गहरी निन्द्रा में सोता है, ईश्वर भक्त उस समय जागता है, और जिस समय को दिन समझकर दुनियादार जागता है, उसको भक्तजन रात्रि समझते हैं. हे मन ! यदि तू प्रियतम के मुख के नूर का अनुभव करना चाहता है तो तू ब्रह्म महूर्त में जाग तथा कोमल शैय्या को त्याग कर किसी अन्धेरे कोने में बैठ. फरीद जी कहते हैं कि जो मनुष्य ब्रह्म बेला में सोता है वह इस परितोष से वंचित रह जाता है. जिसको निन्द्रा से प्रीति है वह ईश्वर की प्रप्ति कैसे कर सकता है?

मौलाना रूम कहते हैं- "ऐ जिज्ञासु! अपनी निन्द्रा को भूल कर रात्रि को जागने वालों के कूंचे में जाओ तो तुम देखोगे कि वे मजनू के समान चारों ओर से अपनी सुरति को खींच कर ईश्वर के चरणों में लगा कर बैठते

हैं. जैसे पतंगा दिये के प्रकाश पर अपने जीवन को न्यौछावर करने को तत्पर रहता है, ऐसे ही भक्तगण अपने आपको अर्पण कर देते हैं. ख़्वाजा कुतुबुद्दीन कहते हैं -" हे पुत्र, तू आधी रात नींँद को त्याग कर इस प्रतीक्षा में रह कि प्यारा तेरी ओर नज़र करे." ईश्वर रात्रि में ही प्रगट होते हैं. यदि कोई इस शुभ अवसर को खो देता है तो वह अपने से अन्याय करता है. दिन का समय कार्य -व्यवहार के लिये है परन्तु रात्रि का समय ईश्वर -भक्ति के लिए होता है. इसलिए पूरी रात्रि ईश्वर से बातें करने में व्यतीत करनी चाहिये . हे जिज्ञासु ! अगर तू रात को न सोये तो तुझे सदैव के लिए अमर पदवी प्राप्त हो जाए तथा

दिव्य-दृष्टि खुल जाए. तब तू दिव्य प्रकाश को देख सकेगा. तूने सहस्त्रों रात्रियाँ लोभ तथा लालसा की पूर्ति करने में खो दीं. यदि तू प्रियतम के लिए न सोये तो तेरा क्या बिगड़ता है ? भक्तजनों ने जो कुछ पाया वह रात में ही पाया. ऐसा भय मत कर कि न सोने से तू अस्वस्थ हो जाएगा. ईश्वर जीवन स्रोत है, उसके सम्पर्क में आने से तू निरन्तर स्वस्थ रहेगा तथा तेरी बुद्धि चेतनता प्राप्त करेगी. इस समय दिव्य - वाणी व प्रकाश का अनुभव होता है जिससे प्रायः सब दुःखों तथा पूर्व संस्कारों का नाश हो जाता है." महापुरुषों का कथन है कि रात्रि के समय आत्मा का प्रियतम से मिलाप होता है और सब आशाओं की पूर्ति होती है. जिनको रात्रि के गुणों का अनुभव हो जाता है उनका हृदय प्रकाशित हो जाता है. रात्रि का समय एकांत, शान्त तथा मौन होता है. इस समय अन्तर की आवाज़ सरलता से सुनाई देती है. आकाश में सितारों का विचित्र दृश्य होता है. उसकी सुन्दरता को देखकर सन्त-जन ईश्वर की विशालता के गुण गाते हैं. ब्रह्म-महूर्त सात्त्विक होने के कारण सब ही सरलता से मन को शान्त तथा एकाग्र कर सकते हैं. परन्तु पहली रात्रि को निन्द्रा से मुक्त होना अति कठिन है. यह तम का समय होता है.

दिन में यदि मनुष्य सो जाए तो रात्रि को जागने का अभ्यास सरलता से हो जाता है. भक्तजन उस समय सोते हैं जब दुनियादार काम करता है. जब दुनियादार सोता है, भक्तजन उस समय भजन करते हैं. यदि रात्रि को न जगा जाए, तो ईश्वर का नाम लेते-लेते सोना चाहिये. ऐसा करने से बुरे स्वप्न नहीं आयेंगे तथा जब नींँद खुलेगी तो मनुष्य अपने को भजन करता हुआ पायेगा.

राम संदेश : जनवरी , १९६८